MP Board Class 7th Hindi Bhasha Bharti Notes Chapter 3 मेरी वसीयत

मेरी वसीयत परीक्षोपयोगी गद्यांशों की व्याख्या

1. मुझे मेरे देश की जनता ने, मेरे हिन्दुस्तानी भाइयों और बहनों ने इतना प्रेम और इतनी मुहब्बत दी है कि मैं चाहे जितना कुछ करूँ, वह उसके एक छोटे से हिस्से का भी बदला नहीं हो सकता। सच तो यह है कि प्रेम इतनी कीमती चीज है कि इसके बदले कुछ देना मुमकिन नहीं। इस दुनिया में बहुत से लोग हुए, जिनको अच्छा समझकर, बड़ा मानकर उनका आदर किया गया, पूजा गया, लेकिन भारत के लोगों ने छोटे और बड़े, अमीर और गरीब सब तबकों के बहनों और भाइयों ने मुझे इतना ज्यादा प्यार दिया कि जिसका बयान करना मेरे लिए मुश्किल है और जिससे मैं दब गया।

सन्दर्भ-प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक भाषा भारती' के 'मेरी वसीयत' नामक पाठ से लिया गया है। इसके लेखक पं. जवाहरलाल नेहरू हैं।

प्रसंग-प्रस्तुत गद्यांश में जवाहरलाल नेहरू ने देश की जनता द्वारा उन्हें दिए गए सम्मान और प्रेम का वर्णन किया है।

व्याख्या-जवाहरलाल नेहरू कहते हैं कि भारतवर्ष के प्रत्येक नागरिक ने उन्हें अपार प्यार और स्नेह दिया है। वह इस प्रेम रूपी उपकार को चुकाने के लिए चाहे कितना भी कुछ करें, किन्तु उसके एक छोटे से भाग को भी चुकाने में असमर्थ रहेंगे। उनके अनुसार प्यार इतनी बहुमूल्य वस्तु है कि उसकी भरपाई दुनिया की मूल्यवान से मूल्यवान वस्तु से भी नहीं की जा सकती है। इस दुनिया में लोगों को उनके कर्मों के आधार पर भगवान तक माना गया है, उनको मान-सम्मान दिया गया है तथा उनकी पूजा तक की गई है। लेकिन भारत में निवास करने वाले प्रत्येक वर्ग के लोगों ने, फिर वह चाहे छोटा हो, बड़ा हो, अमीर हो अथवा गरीब, सभी ने उन्हें इतना अधिक प्यार व मान-सम्मान दिया है कि जिसका वर्णन शब्दों में करना अत्यन्त कठिन है। भारतवासियों के इस निश्छल प्रेम से मैं सदा गद्गद् रहा हूँ।

2. "यह तो होता ही है कि जब बड़े काम किए जाते हैं, उनमें कामयाबी भी होती है, नाकामयाबी भी होती है मगर हम सब शरीक रहें, कामयाबी की खुशी में भी और 'नाकामयाबी के दुःख में भी।"

सन्दर्भ-पूर्व की तरह।

प्रसंग-प्रस्तुत गद्यांश में नेहरूजी ने अनुकूल एवं प्रतिकूल में दोनों परिस्थितियों में संग रहने की बात कही है।

व्याख्या-नेहरू जी अपने सहयोगियों के संग के दिनों को स्मरण करते हुए लिखते हैं कि जब बड़े उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु प्रयास किये जाते हैं तो उनमें सफलता तो प्राप्त होती ही है, कभी-कभी असफलता भी हाथ लगती है। मगर निराशा के इस क्षण में तथा सफलता की स्थिति में खुशी के पलों में हमें सदैव संग रहना चाहिए।

3. मैं चाहता हूँ और सच्चे दिल से चाहता हूँ कि मेरे मरने के बाद कोई धार्मिक रस्में अदा न की जाएँ। मैं ऐसी बातों को मानता नहीं हूँ और सिर्फ रस्म समझकर उनमें बँध जाना, धोखे में पड़ना मानता हूँ। मेरी इच्छा है कि जब मैं मर जाऊँ तो मेरा दाह संस्कार कर दिया जाए। अगर विदेश में मरूँ तो मेरे शरीर को वहीं जला दिया जाए और

मेरी अस्थियाँ इलाहाबाद भेज दी जाएँ। उनमें से मुट्ठी भर गंगा में डाल दी जाएँ।

सन्दर्भ-पूर्व की तरह।

प्रसंग-प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने अपनी मृत्यु के पश्चात् अपनी अस्थियों के एक भाग को पवित्र नदी गंगा में विसर्जित करने की इच्छा का वर्णन किया है।

व्याख्या-नेहरूजी हृदय से यह चाहते हैं कि उनकी मृत्यु के पश्चात् किसी भी प्रकार के धार्मिक रीति-रिवाज एवं विधि-विधान न किये जाएँ। वह रोजी रस्मों में बँधने को धोखे में पड़ने की संज्ञा देते हैं। उनकी अन्तिम इच्छा है कि मृत्यु के पश्चात् उनका दाह संस्कार कर दिया जाए। यदि वे अपनी मातृभूमि से दूर किसी विदेश में मृत्यु का वरण करें तो उनके पार्थिव शरीर को वहीं अग्नि को सौंप दिया जाए और उनकी अस्थियाँ इलाहाबाद भेज दी जाएँ जिनमें से एक अंश को पवित्र नदी गंगा में विसर्जित कर दिया जाए। उस गंगा में, जिससे वह सदैव ही प्रभावित रहे हैं।

4. गंगा तो विशेषकर भारत की नदी है, जनता की प्रिय है, जिससे लिपटी हुई हैं भारत की जातीय स्मृतियाँ, उसकी आशाएँ और उसके भय, उसके विजयगान, उसकी विजय और पराजय। गंगा तो भारत की प्राचीन सभ्यता का प्रतीक रही है, निशानी रही है, सदा बदलती, सदा बहती फिर वही गंगा की गंगा। वह मुझे याद दिलाती है हिमालय की, बर्फ से ढकी चोटियों की और गहरी घाटियों की, जिनसे मुझे मुहब्बत रही है, उनके नीचे उपजाऊ और दूर-दूर तक फैले मैदानों को, जहाँ काम करते मेरी जिन्दगी गुजरी है, मैंने सुबह की रोशनी में गंगा को मुस्कराते, उछलते-कूदते देखा है और देखा है शाम के साये में उदास काली-सी चादर ओढ़े हुए, भेद-भरी जाड़ों में सिमटी-सी आहिस्ते-आहिस्ते बहती सुन्दर धारा और बरसात में दौड़ती हुई, समुद्र की तरह चौड़ा सीना लिए और सागर को बरबाद करने की शक्ति लिए हुए। यही गंगा मेरे लिए निशानी है भारत की प्राचीनता की, यादगार की जो बहती आई है वर्तमान तक और बहती चली जा रही है, भविष्य के महासागर की ओर।

सन्दर्भ-पूर्व की तरह।

प्रसंग-प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने गंगा को भारतीय संस्कृति और सभ्यता का एक उच्च प्रतिमान बताते हुए उससे अपने व्यक्तिगत लगाव का वर्णन किया है।

व्याख्या-गंगा एक पवित्र भारतीय नदी है जो अपने साथ मात्र जल नहीं, बल्कि खुशियाँ और सम्पन्नता लेकर आती है। जिससे जुड़ी हैं भारतीय जनमानस की अनगिनत भावनाएँ। उनकी संस्कृति, उनकी जातीय स्मृतियाँ, उनकी हार व जीत, उनकी उम्मीदें एवं डर। वास्तव में गंगा नदी तो सनातन भारतीय सभ्यता का सदैव से प्रतीक रही है। गंगा जो पल-पल बदलती है, पग-पग मुड़ती है, किन्तु फिर भी अपना वास्तविक स्वरूप नहीं बदलती, रहती है तो बस वही गंगा। उसे देखकर बर्फ से ढकी हिमालय की पर्वत श्रृंखलाओं एवं गहरी घाटियों के दृश्य : आँखों के सम्मुख जीवन्त हो उठते हैं। ऐसे दृश्य जिनसे एक आम आदमी की तरह मैं भी प्यार करता हूँ, उन्हें पसन्द करता हूँ। गंगा के जल को देखकर मुझे सुदूर तक फैले उपजाऊ मैदानी क्षेत्रों का स्मरण हो आता है, जहाँ काम करते हुए मेरे जीवन का एक बड़ा हिस्सा व्यतीत हुआ है। मैंने सूरज की पहली किरण के साये में गंगा के उस स्वरूप को देखा है जिसमें वह मुस्कराती, बलखाती, इठलाती आगे बढ़ती है और शाम को चन्द्रमा के मद्धिम एवं शीतल प्रकाश में स्याह चादर ओढ़े, शान्त रूप धारण किये निरन्तर बहती रहती है। सर्दियों की सर्द रातों में हजारों रहस्य अपने में समेटे गंगा का धीमा प्रवाह उसे और भी सुन्दर बना देता है। बरसात में अपार जल-धन को स्वयं में समेटे गंगा गरजती हुई आगे बढ़ती है और सागर से लोहा लेने को आतुर प्रतीत होती है। यही सुन्दर, पवित्र एवं जीवनदायिनी गंगा भारत की प्राचीनता एवं महानता की प्रतीक है जो भूतकाल से वर्तमान तक अविरल बहती आई है और भविष्य में भी यूँ ही भारतीय भूमि पर बहती रहने वाली है।

https://www.evidyarthi.in/

शब्दकोश

मुमकिन = सम्भव; कीमती = मूल्यवान; तबका = वर्ग, समुदाय; एहसान = उपकार; शरीक = सम्मिलित, शामिल होना; कामयाबी = सफलता; रस्में = रीति-रिवाज, परम्परा; साबित = सिद्ध; बेशुमार = अगणित, जिसे गिना न जा सके; ताल्लुक = सम्बन्ध; ख्याल = विचार; पौराणिक = पुराणों से सम्बन्धित; स्मृतियाँ = यादें; मुहब्बत = प्यार, प्रेम, आहिस्ता = धीरे-धीरे; दरख्वास्त = प्रार्थना, निवेदन; फन = गर्व; सिलसिला = क्रम; आकांक्षा = इच्छा; कद्र = सम्मान; विरासत = धरोहर।